# नेतृत्व
## (Leadership)

समाज मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व को अलग अलग ढंग से परिभाषित की है—

APPOINTMENTS

Lindgreen (1973) के अनुसार "समूह के ऐसे सदस्य को नेता कहा जाता है जो अपनी पसन्द के अनुसार अन्य सदस्यों को व्यवहार करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव डालता है।"

Lapiere & Fransworth (1949) के अनुसार — "नेतृत्व वह व्यवहार है जो अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को उससे कहीं अधिक प्रभावित करता है जितना कि उन सभी व्यक्तियों का व्यवहार नेता को प्रभावित करता है।"

Bass (1990) ने नेतृत्व को परिभाषित करते हुए कहा है "नेतृत्व एक ऐसे समूह के बीच अन्तःक्रिया है जिसमें सदस्यों की प्रत्याशाओं एवं प्रत्यक्षणों तथा परिस्थितियाँ प्रायः संरचित एवं पुनर्संरचित होती रहती हैं। नेता को परिवर्तन का एजेंट समझा जाता है तथा वह ऐसा व्यक्ति होता है जिसके कार्य का प्रभाव अन्य सदस्यों पर इन सदस्यों द्वारा किये गये कार्य का उन पर पड़ने वाले प्रभाव से अधिक होता है। नेतृत्व की उत्पत्ति तब होती है जब समूह का एक सदस्य अन्य सदस्यों की सामर्थ्यता तथा अभिप्रेरणा को परिवर्तित करता है।"

इन परिभाषाओं के विश्लेषण से नेतृत्व के दो पक्षों का पता चलता है— एक नेता जो नेतृत्व करता है तथा दूसरा जो नेतृत्व स्वीकार करता है। नेतृत्व की प्रक्रिया में ये दोनों लोग एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। अन्तर सिर्फ यह होता है कि नेता पर अनुयायियों के व्यवहार का प्रभाव जितना पड़ता है, उससे कहीं अधिक प्रभाव अनुयायियों पर नेता के व्यवहारों का पड़ता है। अर्थात् नेता एवं अनुयायियों के बीच का संबंध एक तरफा न होकर दो तरफा होता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि — नेतृत्व एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अन्तर्वैयक्तिक अन्तःक्रिया होती है, क्योंकि नेता अपने अनुयायियों पर प्रभाव डालता है तथा अनुयायी भी अपने नेता पर प्रभाव डालते हैं। अन्तर सिर्फ यह होता है कि नेता का प्रभाव अनुयायी के प्रभाव से

NOTES

Scanned with CamScanner

अधिक होता है। नेता अपने इस तरह के प्रभाव के कारण ही औपचारिक अध्यक्ष (formal head) से भिन्न होता है।

## नेता के कार्य
## (Functions of Leaders)

किसी समूह में नेता के क्या कार्य होंगे यह मूलतः समूह के लक्ष्य एवं समस्याओं तथा उसके समाधान पर निर्भर करता है। फिर भी सामान्य रूप से एक नेता को कुछ खास-खास कार्य निश्चित रूप से करने होते हैं। जिसे क्रेच, क्रचफिल्ड तथा बैलेची (1962) ने निम्नांकित दो भागों में बाँटा है— प्रधान कार्य तथा सहायक कार्य।

*** प्रधान कार्य (Primary functions)** — प्रधान कार्य से तात्पर्य वैसे कार्य से होता है जो नेता पद पर बने रहने के लिए आवश्यक होता है।

→ कार्यकारिणी के रूप में नेता — कार्यकारिणी के रूप में नेता समूह के कार्यक्रमों का संचालन एवं निर्देशन करता है। वह इन विभिन्न कार्यों का समूह के सदस्यों के बीच उचित बँटवारा भी करता है। इस प्रकार कार्यकारिणी के रूप में नेता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

→ योजना निर्माता के रूप में नेता — समूह के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नेता उपलब्ध साधनों एवं तरीकों का उचित संतुलन करते हुए एक अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन दोनों तरह की योजनाओं को तैयार करता है और तैयार योजना का क्रियान्वयन कैसे किया जा सकता है, उसके स्वरूप को निर्धारित करता है।

→ नीति निर्माता के रूप में नेता — नेता समूह के लक्ष्यों एवं नीतियों (policy) का निर्माण भी करता है। नीतियाँ दो तरह की होती हैं— आन्तरिक नीति तथा बाह्य नीति।

नीति निर्माण के लिए या तो समूह के उच्चस्तरीय नेताओं द्वारा नीति का निर्धारण कर दिया जाता है या समूह के सभी सदस्य नेता की उपस्थिति में एक ठोस नीति का निर्धारण मिल-जुलकर करते हैं। परंतु यह स्पष्ट है कि नीति निर्धारण की अंतिम जवाबदेही नेता पर ही होती है।

NOTES

→ विशेषज्ञ की भूमिका में नेता — समूह सदस्यों को यह विश्वास होता है कि नेता को समूह की सभी समस्याओं के बारे में उच्चतम तकनीकी ज्ञान होगा। इसलिए नेता समूह सदस्यों के लिए एक विशेषज्ञ के रूप में भी कार्य करता है तथा उन्हें उचित परामर्श देता है।

→ बाह्य समूह प्रतिनिधि के रूप में नेता — बाह्य समूह के साथ नेता अपने समूह के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित होकर समूह के विचार को रखता है। वह अपने समूह का अधिकारिक प्रवक्ता के रूप में कार्य करता है। समूह के बाहर से आने वाली सूचनाओं एवं समूह से बाहर जाने वाली सभी तरह की सूचनाओं का आदान-प्रदान भी नेता के माध्यम से ही होता है। इस अर्थ में लेविन ने नेता को 'द्वारपाल' (Gatekeeper) की संज्ञा दी है।

→ आंतरिक संबंधों के नियंत्रक के रूप में नेता — नेता अपने समूह के सदस्यों के आपसी संबंधों को निर्धारित एवं नियंत्रित भी करता है। उसका हर संभव प्रयास रहता है कि सदस्यों का आपसी संबंध सौहार्द्रपूर्ण बना रहे। इसके लिए वह समय-समय सदस्यों को प्रेरित भी करता है।

→ पुरस्कार एवं दंड प्रबंधक के रूप में नेता — नेता अपने समूह के सदस्यों को समूह के मानक के अनुकूल व्यवहार पर पुरस्कार एवं प्रतिकूल व्यवहार करने पर दंड भी देता है। इस तरह नेता अपने समूह पर उचित नियंत्रण बनाये रखने का हमेशा प्रयास करता है।

→ पंच तथा मध्यस्थ के रूप में नेता — कभी-कभी समूह में सदस्यों के बीच आपसी मतभेद एवं संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थिति में नेता दोनों पक्षों को सुनकर वास्तविक स्थिति से अवगत होता है और उचित निर्णय लेते हुए पंच या मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हुए सदस्यों के बीच के आपसी मतभेद एवं संघर्ष को दूर करने का प्रयास करता है।

Scanned with CamScanner

*** सहायक कार्य (Accessory function)** — सहायक कार्यों से तात्पर्य ऐसे कार्यों से होता है जिसे नेता या तो स्वयं करता है या समूह सदस्यों के आग्रह पर करने का निश्चय करता है। ऐसे प्रमुख सहायक कार्य निम्नांकित हैं—

→ आदर्श के रूप में नेता — नेता समूह के सदस्यों के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करता है। अपने व्यवहारों को आदर्श रूप में प्रस्तुत कर वह अन्य सदस्यों से भी वैसे ही व्यवहार को उम्मीद करता है।

→ समूह प्रतीक के रूप में नेता — नेता अपने समूह के प्रतीक के रूप कार्य करता है और समूह में एकता एवं निरंतरता बनाये रखता है।

→ व्यक्तिगत उत्तरदायित्व के प्रति कार्य — कभी-कभी संकटकालीन परिस्थिति में एक सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से कुछ खतरनाक निर्णय लेना होता है, तो इसकी एकपक्षी नेता अपने कंधों पर ले लेता है और उन सदस्यों को चिंता मुक्त कर देता है।

→ सिद्धान्तवादी के रूप में नेता — नेता अपने समूह के सिद्धान्तों, मूल्यों एवं मानकों के अनुकूल व्यवहार करता है और एक सिद्धान्तवादी के रूप में समूह के सदस्यों के सामने उपस्थित रहता है और वह चाहता है कि समूह के अन्य सदस्य भी समूह के सिद्धान्तों, मूल्यों एवं मानकों के अनुरूप ही व्यवहार करें।

→ पिता के रूप में नेता — समूह में नेता का स्थान परिवार के मुखिया अर्थात् पिता के समान होता है। वह समूह के सभी सदस्यों का ख्याल रखते हैं और उनकी भावनाओं का कद्र करते हैं और सदस्य भी अपने नेता की सांवेगिक भावनाओं का कद्र करते हैं और उसके साथ तादात्म्य ~~स्थित~~ स्थापित करने की हमेशा कोशिश करते हैं।

→ बलि के बकरा के रूप में नेता — एक कभी भी समूह

NOTES

अपने लक्ष्य की प्राप्ति में असमर्थ होता है या आशानुरूप लक्ष्य हासिल नहीं हो पाता है तो सदस्यों में निराशा उत्पन्न हो जाती है और अपने नेता के प्रति आक्रोश दिखलाना आरंभ कर देते हैं। प्रायः असफलता का सारा दोष वे नेता के ऊपर डाल देते हैं। परिणामस्वरूप नेता को अपने पद से हटा दिया जाता है या समूह से बाहर कर दिया जाता है। इस तरह से नेता को कभी कभी 'बलि का बकरा' के रूप में भी कार्य करना पड़ता है।

इसप्रकार नेता को अपने समूह के लिए अनेक आवश्यक या प्रधान कार्य तथा सहायक कार्य करने पड़ते हैं, ताकि समूह का अस्तित्व बना रह सके और नेता स्वयं को एक प्रभावशाली नेता के रूप में प्रस्तुत कर सके।